IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, June 2024

छायावाद और प्रतिवाद :एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. राकेश कुमार गौतम

हिंदी विभाग

प्राचार्य, यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, सेमरिया, रीवा, म.प्र.

सारांश:

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद और प्रगतिवाद दो प्रमुख काव्यधाराएँ हैं, जो क्रमशः 1918-1936 और 1936-1943 के बीच विकसित हुईं। यह शोध पत्र इन दोनों धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी उत्पत्ति, विशेषताएँ, प्रमुख कवि, रचनाएँ तथा साहित्यिक प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। छायावाद व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनाप्रधान और प्रकृति-केंद्रित है, जिसमें भावुकता, रहस्यवाद और आत्मानुभूतियों का प्रधानता है, जबकि प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद, वर्ग संघर्ष और क्रांतिकारी चेतना पर आधारित है, जो मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छायावाद द्विवेदी युग की रूढ़िवादिता के विरुद्ध विद्रोह के रूप में उभरा, जबकि प्रगतिवाद छायावाद की वैयक्तिकता और समाज-विमुखता की प्रतिक्रिया है। दोनों में समानताएँ जैसे मानवतावाद और राष्ट्रीय जागरण मौजूद हैं, लेकिन अंतर विषयवस्तु, शैली और उद्देश्य में स्पष्ट हैं। यह पत्र साहित्यिक विश्लेषण, तुलनात्मक विधि और विभिन्न स्रोतों (विकिपीडिया, विकिबुक्स, ई-ज्ञानकोष आदि) पर आधारित है। निष्कर्ष में, दोनों धाराएँ हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण हैं, जिन्होंने आधुनिक कविता को नई दिशा प्रदान की। यह अध्ययन हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी है, जो आधुनिक हिंदी काव्य की गतिशीलता को समझने में सहायक होगा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, June 2024

कीवर्ड्स: (Keywords)

छायावाद, प्रगतिवाद, तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी साहित्य, जयशंकर प्रसाद, निराला, नागार्जुन, मार्क्सवाद, प्रकृति चित्रण, सामाजिक यथार्थवाद, राष्ट्रीय जागरण, कल्पनाशीलता, क्रांतिकारी चेतना।